स्वेट मार्डन की कहानियाँ

सन्तराम वत्स्य

स्वेट मार्डन की कहानियाँ

[मनीषी स्वेट मार्डन की प्रेरक, बोधप्रद और सत्य पर आधारित जीवन्त कहानियों का संग्रह]

सन्तराम वत्स्य

पुस्तकायन

मूल्य : ६.००

प्रकाशक : पुस्तकायन (सुबोध पॉकेट बुक्स का उपक्रम) २/४२४० ए, अंसारी रोड, नई दिल्ली ११०००२ / संस्करण : १९८७
मुद्रक : अजय प्रिण्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

कहानियों का क्रम

क्रम		पृष्ठ संख्या
१. परिश्रम	...	५
२. सच्चे का बोलबाला	...	७
३. एक पाठ की कीमत	...	८
४. करे सेवा, पाए मेवा	...	१२
५. झूठ की कीमत	...	१४
६. अचूक निशाना	...	१५
७. समय का मोल	...	१७
८. हर बात शिक्षा दे सकती है	...	२०
९. असली और नकली	...	२१
१०. यह झूठ होगा	...	२२
११. अवसर की पहचान	...	२४
१२. ईमानदार बालक	...	२६
१३. ईश्वर की देन	...	२९
१४. मित्र के लिए मौन बलिदान	...	३५
१५. मैं स्कूल जाऊँगा !	...	४२

मनीषी स्वेट मार्डन

मनीषी स्वेट मार्डन का नाम भले ही विदेशी हो पर यह नाम सुपठित भारतीयों से नितान्त अपरिचित नहीं है। इतना ही नहीं, उनका आत्मा पूरी तरह भारतीय तत्त्व-ज्ञान से भावित है। उन्हें व्यावहारिक वेदान्त का महान् आचार्य कहा जाए तो इसमें लेशमात्र भी अत्युक्ति नहीं होगी।

वे अमरीका के वासी थे। यह कहा जा सकता है कि कर्मयोग का अमरीका में जो माहात्म्य देखने में आता है, उसके पीछे स्वेट मार्डन, जेम्स एलन, सैमुअल स्माइल्स जैसे आधुनिक युग के विचार-निर्माताओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

संसार के नवयुवकों का जैसा पथ-प्रदर्शन इन सुधी विचारकों ने किया है, उसकी मिसाल मिलना कठिन है।

मानव-मात्र के भीतर जो विलक्षण शक्ति सोई पड़ी है, उसे जगाकर क्रियाशील बनाने में इन मनीषियों की भूमिका अद्भुत है।

वे ईश्वरीय न्याय और व्यवस्था के प्रति श्रद्धा-विश्वास उत्पन्न करते हैं और बताते हैं कि हम जैसे भी हैं, अपने ही कारण हैं—चाहे भले हैं या बुरे—उसके लिए कोई दूसरा उत्तरदायी नहीं है। वे मनुष्य को परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने की न केवल प्रेरणा देते हैं, उन औजारों से भी लैस करते हैं जिनकी किसी भी अच्छे काम को पूरा करने के लिए अपरिहार्य आवश्यकता होती है।

वे भिखारी को भगवान् बनने का मन्त्र सिखाते हैं। वे कठिनाइयों पर विजय पाने की क्षमता देते हैं। वे बताते हैं कि जीवन समय का नाम है और यह क्षणों से बनता है। एक-एक क्षण को जीवन-निर्माण में लगाने की कला वे सिखाते हैं। वे बताते हैं कि तुम ईश्वर की सन्तान हो और जीवन में आनन्द तुम्हारा प्राप्तव्य है। वे आत्म-स्वरूप की पहचान का मार्ग प्रशस्त करते हैं और अभावों में रोने-झींकने वालों को आनन्द और मस्ती से भर देते हैं।

वे मनुष्य को अपना भाग्य-विधाता बनने का उपदेश देते हैं।

स्वेट मार्डन की पुस्तकों के अध्ययन और मनन से संसार-भर में लाखों-करोड़ों व्यक्तियों ने विचारों की पवित्रता, ईश्वरीय न्याय में विश्वास, सत्कर्म करने की प्रेरणा और उत्साह-साहस जैसे सद्गुणों को पाकर अपने को धन्य किया है और सच्चे आनन्द की प्राप्ति की है।

इस मानव-जीवन के शिल्पी ने अपनी पुस्तकों में जो सच्चे प्रसंग और घटनाएँ दी हैं, वे ही इन प्रेरक कहानियों का आधार हैं।

—सन्तराम बत्स्य

परिश्रम

जॉन ऐडम्स के बचपन की यह घटना है। वह नियमित रूप से स्कूल जाता था। अपनी पढ़ाई में पूरा समय लगाता था। पर उसे व्याकरण समझने में बड़ी कठिनाई होती थी। व्याकरण की कोई बात उसके पल्ले नहीं पड़ती थी। और आप जानते हैं कि जो विषय अरुचिकर लगता है, छात्र उसे टालता रहता है और वह विषय धीरे-धीरे उसकी समझ और पकड़ से बाहर होता चला जाता है।

यह ठीक उसी तरह की बात है, जैसे आप अपने दैनिक काम को एक दिन टालेंगे तो वह दुगुना हो जाएगा और अगले दिनों में भी टालते जाएँगे तो काम का ढेर लगता चला जाएगा। और यह काम का ढेर जितना बढ़ता जाएगा, उसे निपटाना उतना ही कठिन होता जाएगा।

एक दिन बालक जॉन ऐडम्स ने व्याकरण पढ़ने से उकताकर अपने पिताजी से कहा, "पिताजी, मुझसे व्याकरण की पुस्तक याद नहीं होती। मैं इसे नहीं पढ़ूँगा।"

उसके पिता ने कहा, "कोई बात नहीं, तुम व्याकरण पढ़ना छोड़ सकते हो। कल से खेतों में काम करने चलो। खेतों में नालियाँ खोदने को पड़ी हैं। नालियाँ खुदेंगी, तभी ठीक से सिंचाई हो सकेगी और तब भरपूर फसल मिलेगी।"

सिर मुड़ाते ही ओले पड़े। अब जॉन से जवाब देते न बने कि क्या कहे। जितनी आसानी से उसने व्याकरण पढ़ना छोड़ने की बात कही थी, खेतों में काम न करने की बात को उतनी आसानी से नहीं कह सकता था। उसने पिता की आज्ञा का पालन किया और दूसरे दिन खेतों में नालियाँ खोदने का काम करता रहा।

जब शाम को वह घर लौटा तो सारा शरीर दुःख रहा था। दिनभर के कठिन परिश्रम से उसका एक-एक जोड़ दुखने लगा था। अब उसे मालूम हुआ कि खेतों में काम करने के मुकाबले में व्याकरण याद करना कितना आसान काम है।

दूसरे दिन उसने अपने पिता से कहा, "पिताजी, मैं स्कूल जाऊँगा और व्याकरण याद करने की पूरी कोशिश करूँगा।"

यही बालक आगे चलकर जार्ज वाशिंगटन के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रपति बना।

सच्चे का बोलबाला

एथन ऐलन को किसी का कर्ज चुकाना था। पर उसके पास उस समय उतनी राशि नहीं थी। वह चाहता था कि अगर मुझे थोड़ा-सा समय और मिल जाए तो मैं कर्ज चुका दूं।

साहूकार की ओर से एथन ऐलन को नोटिस मिल चुका था कि अमुक तारीख तक मेरे ऋण की अदायगी करो।

एथन ऐलन एक वकील के पास गया और उसे अपनी कठिनाई बताई।

वकील ने कहा, "आप एकदम निश्चिन्त हो जाएँ। मैं सब ठीक कर लूंगा। इसमें घबराने की कोई बात ही नहीं है।"

दूसरे दिन कचहरी में जाकर वकील ने एथन ऐलन की पैरवी करते हुए कहा, "इस परनोट पर जो वादी के हस्ताक्षर हैं, वह सही नहीं हैं।" वकील का उद्देश्य था कि इस तरह का अड़ंगा लगा देने से प्रतिवादी को गवाह जुटाने होंगे और तब तक वादी पैसों की व्यवस्था कर लेगा और मामला निबट जाएगा।

यह सुनकर पास खड़े ऐलन ने कहा, "मैंने न्यायालय में आकर झूठ बोलने के लिए आपको अपना

वकील नहीं बनाया है। यह 'परनोट' असली है। इस पर मेरे ही हस्ताक्षर हैं। इसकी शर्तों का पालन करने की मेरी पूरी जिम्मेदारी है। मैं इस कर्ज को अवश्य चुकाऊँगा। मैं अपनी जिम्मेदारी से मुकरना नहीं चाहता। मैं तो कुछ दिनों की मोहलत चाहता हूँ ताकि पैसों की व्यवस्था कर सकूँ।"

वकील मारे शर्म के धरती में गड़ गया। जज भी इस सारी बात को सुन चुका था।

जज ने ऐलन को उचित मोहलत दे दी।

एक पाठ की कीमत

एक राजनीतिक पार्टी ने एक नौसिखिये को अपना उम्मीदवार बनाया। फिर उसे एक पुराने घुटे हुए राजनीतिज्ञ के पास भेजा ताकि वह उससे सफलता के कुछ गुर सीख आए। असल उद्देश्य यह सीखना था कि जनता से वोट कैसे बटोरे जाएँ।

उस पुराने राजनीतिज्ञ ने अपनी शर्त बताई, "जब भी तुम मेरी किसी आज्ञा का उल्लंघन करोगे तो तुम्हें पाँच डालर जुर्माना देना होगा।"

नौसिखिये ने शर्त स्वीकार कर ली।

बूढ़ा बोला, "तुम किस दिन से सीखना शुरू

करोगे ?"

युवक बोला, "आज से। अभी शुरू कर दीजिए न !"

"ठीक है।" वृद्ध ने कहा—"मेरी पहली सीख यह है कि तुम्हारे बारे में कोई यदि अपमानजनक शब्द कहे तो बुरा न मानो। अपने ऊपर हर समय काबू रखो।"

"हाँ, यह मैं कर सकता हूँ। लोग मेरे बारे में चाहे जो कुछ कहें मैं उनकी उपेक्षा कर सकता हूँ।" युवक ने दृढ़ता से कहा।

"अच्छी बात है। मेरा यह पहला पाठ है। वैसे मैं अपने मन की बात तुम्हें बता दूँ कि तुम्हारे जैसे सिद्धान्तहीन व्यक्ति का चुनाव जीतना काफी हानिकारक सिद्ध होगा, पार्टी के लिए भी और देश के लिए भी। तुम्हारे जैसे शैतान को पार्टी ने टिकट कैसे दे दिया ?" वृद्ध महाशय ने कहा।

"आप तो एकदम असभ्य हैं। बात करने की भी तमीज नहीं।" युवक ने क्रोध से कहा।

"निकालो पाँच डालर !" वृद्ध महाशय बोले, "तुमने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया है।"

"अरे, यह तो एक पाठ है न !" युवक ने खिसियाना-सा होकर कहा।

"हाँ-हाँ, यह पाठ है। पर वह शर्त इस पर पूरी तरह लागू होती है, समझे !" वृद्ध ने कहा।

"अरे, आप तो एकदम धूर्त हैं।" युवक ने विरोध किया।

"पाँच डालर और निकालो। पाँच और पाँच दस।" बूढ़े ने विजयी मुस्कान के साथ कहा।

'अरे, अरे ! मैं फिर चूक गया। एक और पाठ ! इस बुढ़ऊ ने तो जरा-सी देर में दस डालर बना लिये।' वह होंठों में बुदबुदाया।

"हाँ, दस डालर।" वृद्ध ने हाथ आगे बढ़ाया, "मेरे दस डालर अभी दे दीजिए। वैसे मैं बाद में भी ले लेता किन्तु आप तो ऋण लेकर न लौटाने के लिए बदनाम हैं। इसलिए उधार नहीं चलेगा।"

"आपको इस तरह बकवास करते शर्म नहीं आती।" युवक ने दाँत पीसते हुए कहा।

"श्रीमन् ! पाँच डालर और। लाओ पूरे पन्द्रह डालर।" बूढ़े ने फिर मात दे दी।

"अच्छा, अब मैं अपना सन्तुलन नहीं खोऊँगा। मैं बार-बार चूक जाता हूँ कि मैं यहाँ कुछ सीखने आया हूँ।" युवक को पछतावा हो रहा था।

"ठीक है। मैं तुमसे जुर्माना वसूल करने पर जोर नहीं देना चाहता। मैं जानता हूँ कि तुम कितने निर्धन

परिवार के व्यक्ति हो और तुम्हारे स्वर्गीय पिता इलाके-भर में कितने बदनाम थे।" बूढ़े ने यह कहकर एक और तीर छोड़ा।

"मैं एक घूंसा मारूँगा तो तुम्हारा जबड़ा टूट जाएगा। बदतमीजी की भी हद होती है।" युवक ने मुक्का तानते हुए कहा।

"पाँच डालर और लाओ। अब कुल बीस हुए।" बूढ़ा फिर दाँव जीत गया था।

'अपने पर काबू रखो।' यह था पहला पाठ, जिसकी युवक को यह कीमत चुकानी पड़ी।

बूढ़े ने आज के पाठ का उपसंहार करते हुए कहा, "यह बात अच्छी तरह अपने मन में बिठा लो कि जब भी तुम क्रोध करते हो या अपनी निन्दा सुनकर बुरा मानते हो तो पाँच डालर न सही, पाँच वोट जरूर खो देते हो। और चुनाव जीतना है तो नोटों से वोटों का महत्त्व निश्चित रूप से अधिक है।"

करे सेवा, पाए मेवा

एक दिन पिट्सबर्ग में एक लंगड़ा वृद्ध सड़क पर चला जा रहा था। हल्की बूंदाबांदी के कारण सड़क पर फिसलन हो गई थी। बेचारे लंगड़े का पाँव फिसल

गया और वह गिर पड़ा। उसके हाथ की छड़ी एक ओर जा पड़ी और सिर की टोपी दूसरी ओर।

वह अभी सँभल भी न पाया था कि एक धूर्त लड़के ने चलते-चलते टोपी को ठोकर मारी और दूर फेंक दिया। पीछे एक और लड़का आ रहा था। उसने लंगड़े व्यक्ति को सहायता देकर उठाया, उसकी छड़ी उठाकर दी और फिर दूर पड़ी टोपी को उठा लाया और झाड़-पोंछकर दे दी। इतना ही नहीं, उसने वृद्ध से कहा कि मैं आपको, आपके घर तक छोड़ आता हूँ। आप मेरे कन्धे पर हाथ रख धीरे-धीरे चलिये।

जब बूढ़े का घर आ गया तो उसने लड़के का धन्यवाद किया और नाम-पता पूछा। लड़का अपनी राह गया।

कुछ दिनों बाद लड़के को एक हजार डालर का एक बैंकड्राफ्ट डाक से मिला। पहले तो उसकी समझ में कुछ नहीं आया कि ड्राफ्ट किसने भेजा किन्तु उस के साथ के पत्र को पढ़कर सब-कुछ मालूम हो गया।

यह ड्राफ्ट उसी लंगड़े वृद्ध ने भेजा था। लड़के ने उसकी सहायता अपने भले स्वभाव के कारण की थी, पुरस्कार पाने के लिए नहीं। पर कभी-कभी कोई छोटा-सा सेवा का काम भी बड़ा परिणाम दे जाता है।

झूठ की कीमत

एक बड़ी दुकान वाले को एक बिक्रीकर्ता की आवश्यकता थी। उसने विज्ञापन किया तो एक युवक साक्षात्कार के लिए आया।

मालिक ने कहा, "अगर मैं तुम्हें काम पर रख लूं तो क्या तुम मेरी आज्ञा के अनुसार काम करोगे ?"

"हाँ श्रीमान् ! मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा !" युवक ने विनयपूर्वक उत्तर दिया।

मालिक ने फिर कहा, "अगर मैं कहूँ कि इस चीनी को, ग्राहक को अव्वल दर्जे की बताना तो क्या तुम वैसा ही बताओगे ?"

युवक ने कहा, "निस्सन्देह, मैं कहूँगा कि यह चीनी अव्वल दर्जे की है।"

मालिक ने दूसरी बार पूछा, "अगर मिलावट वाली कॉफी को, शुद्ध बताने को कहूँ तो तुम क्या कहोगे ?"

युवक ने कहा, "आप मुझे जैसा बताने को कहेंगे, मैं वैसा ही बताऊँगा।"

तीसरा प्रश्न मालिक ने पूछा, "अगर मैं बासी मक्खन को ताजा बताने को कहूँ तो बताओगे न ?"

"जैसा आप कहलवाना चाहेंगे, मैं वैसा कह

दूंगा।"

दुकानदार का माथा ठनका। उसने पूछा, "अच्छा, अब यह बताओ कि तुम वेतन क्या लोगे ?"

युवक ने पूरी गम्भीरता से उत्तर दिया, "एक सौ डालर प्रति सप्ताह मुझे चाहिये।"

दुकानदार को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। वह युवक के पास गया और हैरानी से पूछा, "एक सौ डालर प्रति सप्ताह ! क्या मतलब !"

युवक ने समझाते हुए कहा, "मतलब तो साफ है। अव्वल दर्जे का झूठ बोलने वाला नौकर अव्वल दर्जे का वेतन भी लेगा। किन्तु अगर आप मुझसे सीधा-सच्चा काम करवाना चाहें तो मेरा वेतन तीन डालर प्रति सप्ताह होगा।"

अचूक निशाना

एक आदमी को अपने यहां एक नौकर रखना था। उसने विज्ञापन दिया। तीस लड़के नौकरी के इच्छुक थे। पर उसे तो केवल एक की जरूरत थी। इसलिए उसने चुनने के लिए एक तरीका निकाला।

उसने दीवार पर एक निशान लगाया और एक रबड़ की साधारण-सी गेंद देकर कहा कि इस जगह

खड़े होकर प्रत्येक उम्मीदवार निशान पर सात बार गेंद मारेगा। जिसकी गेंद सबसे ज्यादा बार निशाने पर लगेगी, उसे ही नौकरी मिलेगी।

सबने बारी-बारी गेंद फेंककर निशाना लगाने की कोशिश की पर एक को भी सफलता नहीं मिली।

तब उस आदमी ने उन सबसे कहा, "कल फिर आना और निशाना लगाने की कोशिश करना। अगर किसी में कुछ सुधार दिखाई दिया तो देखूंगा।"

दूसरे दिन उन तीस में से एक लड़का वापस आया। उसने कहा कि मैं आज फिर परीक्षा देने के लिए तैयार हूँ।

उसे गेंद दे दी गई। मालिक मौके पर खड़ा देखता रहा। उसने एक-एक करके सात निशाने लगाए और हर बार गेंद निशाने पर लगी।

उस आदमी को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि कल यही लड़का एक बार भी निशाने पर गेंद नहीं फेंक सका था और आज हर बार इसका निशाना ठीक बैठ रहा है। आखिर इसकी वजह क्या है! उसने अपने मन की बात लड़के को बताई।

लड़का बोला, "मुझे नौकरी की सख्त जरूरत है ताकि मैं अपनी माँ की सहायता कर सकूं। इसलिए मैं सारी रात अपने घर की दीवार पर निशाना लगाकर

अभ्यास करता रहा।"

जिनकी ऐसी सच्ची लगन होती है, वे कभी असफल नहीं होते।

समय का मोल

एक व्यक्ति बड़ी देर तक पुस्तकों की दुकान की अलमारियों में लगी पुस्तकों को देखता रहा। अन्त में उसने दुकान के कर्मचारी से एक पुस्तक का मूल्य पूछा।

कर्मचारी ने एक डालर मूल्य बताया।

ग्राहक, "क्या कुछ कम नहीं हो सकता ?"

कर्मचारी ने कहा है कि हमारे यहाँ निश्चित मूल्य पर ही पुस्तकें बेची जाती हैं।

ग्राहक थोड़ी देर सोचता रहा। फिर बोला, "क्या दुकान के मालिक श्री फ्रैंकलिन अन्दर हैं ?"

"हाँ, कुछ आवश्यक काम कर रहे हैं।" कर्मचारी ने कहा।

"मैं उनसे मिलना चाहता हूँ। ज़रा उन्हें बुला दीजिए।" ग्राहक ने कहा।

कर्मचारी मालिक को बुला लाया। ग्राहक ने मालिक से कहा, "मैं इस पुस्तक को खरीदना चाहता

हूँ। इसका कम-से-कम कितना मूल्य आप ले लेंगे ?"

"सवा डालर !" श्री फ्रेंकलिन ने कहा।

"सवा डालर ! अभी तो आपका कर्मचारी एक डालर बता रहा था।" ग्राहक ने विस्मयपूर्वक कहा।

"ठीक है, किन्तु आपने जो मुझे काम छुड़ाकर भीतर से बुलाया, इस समय का मूल्य इसमें और जुड़ गया।" फ्रेंकलिन ने स्पष्ट किया।

ग्राहक ने सोचा कि ये मुझसे मजाक कर रहे हैं। वह बोला, "अब इसका ठीक-ठीक मूल्य बताइए, ताकि मैं ले लूं।"

"डेढ़ डालर !" फ्रेंकलिन ने बड़ी दृढ़ता से उत्तर दिया।

"डेढ़ डालर ! एक मिनट पहले तो आप सवा डालर बता चुके हैं।" ग्राहक ने आश्चर्य से कहा।

"तब वह ठीक था। अब यह ठीक है। आप जितनी देर करते जाएँगे, मेरे समय का मोल भी जुड़ता जाएगा।"

ग्राहक ने मूल्य चुकाया और अपनी राह ली। आज उसने पुस्तक के साथ एक अमूल्य शिक्षा भी ली थी कि 'समय मूल्यवान है'।

हर बात शिक्षा दे सकती है

इतिहास-प्रसिद्ध तैमूरलंग के जीवन की एक प्रसिद्ध घटना। एक बार शत्रु उसका पीछा करते हुए उसके बहुत पास आ पहुँचे। अब उसने भागने के बजाए कहीं छिपना बेहतर समझा। वह एक पुराने खण्डहर भवन में छिप गया।

वहाँ चुपचाप दुबक कर बैठा वह यों ही पास की दीवार पर देख रहा था। उसकी नजर एक चींटी पर पड़ी जो मक्का का एक दाना घसीट कर ले जाने का प्रयत्न कर रही थी। जब वह उस दाने को ऊँचाई पर ले जाने लगती तो वह गिर पड़ता। कई बार असफल होने पर भी वह अपने प्रयास को बार-बार दोहराती रही।

वह हर बार दाने समेत नीचे लुढ़क पड़ती और घसीट कर ऊपर लाने लगती।

तैमूरलंग इस नन्हीं जान चींटी के दृढ़ संकल्प और धैर्य को देखकर दंग रह गया।

वह गिनने लगा कि यह कितनी बार इस प्रयास को दोहराएगी। सत्रह बार असफल होने के बाद अठारहवीं बार चींटी उस दाने को घसीट ले जाने में सफल हो गई।

चींटी के बार-बार प्रयत्न करने से शिक्षा लेकर तैमूरलंग ने अपने को नए उत्साह और आशा से भरा और विजयी हुआ।

असली और नकली

घड़ी-निर्माता ग्राहम ने ग्राहक से कहा, "श्रीमान्! यह घड़ी मेरी बनाई हुई है। आप इसे निश्चिन्त होकर ले जाइए। अगर सात साल तक इसमें पांच मिनट का भी फर्क पड़ गया तो मैं दाम वापस कर दूंगा।"

सात साल बाद वह आदमी विदेश रहकर लौटा और बोला, "लीजिए, मैं आपकी घड़ी वापस करने आया हूँ।"

ग्राहम—"हाँ, मुझे अपनी शर्त याद है। कहिए, घड़ी कैसी रही?"

ग्राहक—"पिछले सात वर्षों से यह मेरे पास है। यह पांच मिनट से ज्यादा फर्क देती है।"

ग्राहम—"ठीक है। आप मूल्य वापस ले जाइए और घड़ी लौटा दीजिए।"

ग्राहक—"लेकिन मैं घड़ी आपको वापस नहीं दूंगा। चाहे आप मुझे इसके दस गुने ही दाम क्यों न दें।"

ग्राहम—"पर मैं अपने वचन को झूठा नहीं होने दूंगा।" यह कहकर उसने घड़ी ले ली और दाम वापस दे दिए।

ग्राहम ने घड़ी बनाने की कला टामपियन नामक प्रसिद्ध कारीगर से सीखी थी। घड़ी पर उसका नाम श्रेष्ठता का प्रमाण माना जाता था।

एक बार एक ग्राहक उसी नाम वाली एक घड़ी सुधारने को लाया। वह घड़ी नकली थी। नकल करने वाले ने उस पर टामपियन का नाम लिख रखा था। नकल तो झूठ के सहारे ही चलती है।

टामपियन ने ग्राहक के सामने ही वह घड़ी हथौड़ी मारकर तोड़ दी।

ग्राहक को उसका यह व्यवहार बड़ा विचित्र लगा।

टामपियन ने नई घड़ी निकालकर ग्राहक को देते हुए कहा, "अपनी नकली घड़ी के बदले यह असली घड़ी लीजिए। मेरे नाम की प्रसिद्धि के कारण बाजार में नकली घड़ियाँ बिक रही हैं।"

यह झूठ होगा

बिलिंगडन महोदय की उमर जब ढलने लगी तो वे ऊँचा सुनने लगे। डाक्टरों ने देखा। अन्त में एक

प्रसिद्ध डाक्टर इलाज के लिए नियुक्त हुआ।

इस डाक्टर ने जो दवाई कान में डाली, उसने लाभ के बजाए हानि की। विलिंगडन एकदम बहरे हो गये। यह दवाई बहुत तेज थी।

डाक्टर बहुत डरा। उसे अपनी बदनामी का भय तो था ही, विलिंगडन उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई भी कर सकते थे। डाक्टर बहुत पछताया किन्तु अब क्या हो सकता था। यह बात अगर फैल जाती तो कोई उसके पास इलाज करवाने नहीं आता।

उसने विलिंगडन महोदय से अपनी परेशानी बताई। वे उदार स्वभाव के थे। उन्होंने कहा, "आप मेरी ओर से निश्चिन्त रहिए। मैं किसी से नहीं कहूंगा कि आपकी दवाई से मेरे कान खराब हुए।"

डाक्टर इतना आश्वासन मिलने पर कृतज्ञता प्रकट करने लगा और बोला, "अगर आप प्रतिदिन मुझे अपने यहां आने दें तो लोगों का मुझ पर से विश्वास नहीं उठेगा।"

पर सत्य पर दृढ़ आस्था रखने वाले विलिंगडन ने डाक्टर का यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा, "यह झूठ होगा! मैं यह नहीं कर सकूंगा।"

अवसर की पहचान

एक चित्रशाला में बहुत-से चित्रों की प्रदर्शिनी हो रही थी। एक युवक बड़ी रुचि से चित्रों को देख रहा था। वह एक चित्र के आगे जा खड़ा हुआ और उसे ध्यानपूर्वक देखता रहा। चित्र का कोई नाम नहीं रखा गया था। दर्शक ठीक-ठीक समझ नहीं पा रहा था कि चित्रकार इस चित्र के द्वारा क्या कहना चाहता है।

अब पहले चित्र को देख लें :

चित्र में एक उड़ रहे व्यक्ति को दिखाया गया था। इस व्यक्ति के सिर के बाल चेहरे पर पड़े हुए थे और पूरा चेहरा ढँक गया था। चेहरे को देखकर पहचानने का प्रयत्न व्यर्थ था।

इसके पैरों में पंख लगे हुए थे।

दर्शक ने चित्रकार से पूछा, "यह किसका चित्र है ?"

चित्रकार ने उत्तर दिया, "यह 'अवसर' का चित्र है।"

दर्शक—"इसका मुँह क्यों ढँका हुआ है ?"

चित्रकार—"क्योंकि जब यह लोगों के सामने आता है तो वे इसे पहचान नहीं पाते।"

दर्शक—"इसके पैरों में पंख क्यों लगे हुए हैं ?"

चित्रकार—"यह ज्यादा देर किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। जल्दी ही नजरों से ओझल हो जाता है। यह बार-बार नहीं आता। अवसर के सिर का पिछला भाग एकदम गंजा है। इसका अभिप्राय यह है कि यदि तुम उसके सामने के बाल पकड़ लो तो ठीक, नहीं तो जब यह जरा-सा भी सरक जाता है तो इसे पीछे से पकड़ने का कोई उपाय नहीं है।"

ईमानदार बालक

एक छोटा गरीब बालक चौराहे के पास दियासलाई की डिब्बियाँ बेच रहा था। मैले-कुचैले और फटे कपड़े पहने, नंगे पाँव वह सर्दी से ठिठुर रहा था। वह राह चलते लोगों से दो-चार डिब्बियाँ खरीद लेने का आग्रह करता।

एक सज्जन से उसने कुछ डिब्बियाँ खरीद लेने का अनुरोध किया।

वे सज्जन बोले कि मुझे इनकी आवश्यकता नहीं है।

लड़के ने फिर कहा, "एक आना ही तो दाम है। ले लीजिए ना, घर पर काम आएँगी।" वह याचनाभरी आँखों से उन सज्जन की ओर देख रहा था कि ये कहें

तो डिब्बियाँ निकाल दूँ।

पर उन सज्जन ने फिर मना कर दिया। हालाँकि उस लड़के पर उन्हें तरस आ रहा था।

पर लड़का इतना जरूरतमन्द था कि बेचे बिना उसे रोटी नहीं मिलती। उसने फिर कहा, "अच्छा, चार आने की पाँच ले लीजिए। अब तो ठीक है न। बताइये, कितनी दूँ ?"

इस लड़के से पीछा छुड़ाने के लिए उन सज्जन ने कहा कि अच्छा दे दे।

पर जब जेब में हाथ डाला तो खुले पैसे नहीं थे। उन सज्जन ने डिब्बियाँ लौटाते हुए कहा कि मेरे पास खुले पैसे नहीं हैं, इसलिए इन्हें वापस ले लो।

लड़के ने बड़ी नम्रता से कहा, "मेरे पास भी खुले पैसे नहीं हैं। पर मैं अभी भुनाकर ला देता हूँ।"

बालक की बात सुनकर उस व्यक्ति ने एक रुपया दे दिया। लड़का सड़क पार कर रुपया भुनाने चला गया। थोड़ी देर तक वह सज्जन प्रतीक्षा करते रहे पर लड़का नहीं लौटा। उसने सोचा कि शायद वह कोई ऐसा-वैसा लड़का होगा और अब बाकी पैसे लौटाने नहीं आएगा। वे अपनी राह चले गए।

× × ×

शाम को नौकर ने भीतर आकर बताया कि एक

लड़का आपसे मिलना चाहता है। उन्होंने लड़के को भीतर बुला लिया। लड़के के भीतर आने पर उन्होंने अनुमान लगाया कि शायद यह उस लड़के का भाई होगा। यह लड़का भी मैले-कुचैले और फटे कपड़े पहने हुए था। उसके अधनंगे शरीर की हड्डियां दिखाई दे रही थीं। नमस्कार करने के बाद लड़के ने डबडबाई आंखों से कहना शुरू किया—"क्या आपने मेरे भाई से दियासलाई की डिब्बियां ली थीं और एक रुपया दिया था?"

उन सज्जन के 'हां' कहने पर उस लड़के ने बाकी पैसे उनको थमाते हुए कहा कि वह उस समय आपके पैसे नहीं लौटा सका। बात ही कुछ ऐसी हो गई। वह सड़क पार करते समय एक गाड़ी से टकरा गया और ज़ख्मी हो गया। पैसे भी गिर पड़े और खो गए। उसकी दोनों टांगें कुचल गई हैं और डाक्टरों का कहना है कि वह बचेगा नहीं। उसने किसी तरह ये पैसे भेजे हैं।" और कहते-कहते लड़के की रुलाई फूट पड़ी।

इस सारी राम-कहानी को सुनकर उन सज्जन को बहुत दुःख हुआ और वे उसे देखने गए।

जाकर जो कुछ देखा, उससे उनके हृदय की पीड़ा और भी बढ़ गई। वह घायल लड़का एक टूटी-फूटी झोंपड़ी में घास-फूस के ऊपर बिछी एक गुदड़ी पर पड़ा

था। उसने आने वाले सज्जन को पहचान लिया और दर्द से कराहता हुआ बोला, "मैंने आपका दिया रुपया भुना लिया था और वापस आ ही रहा था कि एक घोड़ागाड़ी से टकरा गया और गिर पड़ा। मेरी दोनों टांगें टूट गई हैं।" वह दर्द से बुरी तरह कराहते हुए बोला, "मुझे अपने मरने की चिन्ता नहीं है। चिन्ता तो इस छोटे की है। इसका अब क्या होगा!" यह कहकर उसने छोटे भाई को गले से चिपका लिया, दोनों रोने लगे।

उस सज्जन ने बड़े भाई का हाथ पकड़कर कहा, "बेटा! तुम इसकी चिन्ता मत करो। इसकी देख-भाल का जिम्मा मैं लेता हूँ।"

बालक कुछ बोल तो नहीं सका पर उनकी ओर देखकर उसने बुझते दीपक जैसी अपनी आँखों से उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की और सदा के लिए आँखें बन्द कर लीं।

ईश्वर की देन

क्रियों एक निर्धन दास था। वह जन्मजात कलाकार था। वह पत्थरों में सौन्दर्य को इस खूबी से उकेरता था कि देखने वाले दंग रह जाते। सुन्दरता

का यह पुजारी छेनी और हथौड़ी से पत्थरों को ऐसा गढ़ता कि मूर्तियाँ बोलने लगतीं। अपनी कल्पना की मूर्ति को, मन में बनाई मूर्ति को वह पत्थरों में साकार कर देता।

वह यूनान देश का वासी था और उस समय के यूनान के कानून के अनुसार, कोई भी दास ललित कलाओं—संगीत, नृत्य, चित्र और मूर्तिकला—का कलाकार नहीं बन सकता था। कला की उपासना ऊँचे कुलों के लोग ही कर सकते थे, दास नहीं। यूनान का समाज दो हिस्सों में बँटा हुआ था। एक वर्ग स्वामियों का था और दूसरा सेवकों का; दासों का। स्वामियों को सब तरह की सुख-सुविधाओं को भोगने का अधिकार था। दासों का कर्त्तव्य स्वामियों की सेवा करना था। जीवन-भर दूसरों की सेवा करते हुए कठिन परिश्रम करना और बदले में तनढक कपड़ा और भोजन। बस, यही उनका भाग्य था।

जिन दिनों यह कानून बना और लागू हुआ, उन दिनों क्रियों कुछ सुन्दर मूर्तियाँ बनाने में लगा हुआ था। संगमरमर की शिलाओं में से वह ऐसे-ऐसे सुन्दर रूपों की सृष्टि कर रहा था कि देखकर आँखें जुड़ जाएँ। वह चाहता था कि उसे इस वर्ष का श्रेष्ठ मूर्तिकार होने का पुरस्कार मिले। किन्तु इस कानून

ने तो मानो उसके हाथ ही काट डाले। अब क्या हो! अब हाथ में हथौड़ी-छेनी पकड़ने का अर्थ था कि जेल में बन्द होना। उसका दिल बैठ गया।

स्त्रियों की एक छोटी बहन थी। इस नए कानून का समाचार सुनकर वह रोने लगी। उसे अपने भाई का भविष्य अन्धकारमय लगने लगा। वह भगवान् से प्रार्थना करने लगी कि हे प्रभो! हे देवताओ! मेरे भैया की रक्षा करना। मनुष्यों ने तो हमें ठुकरा दिया है। हमारे जीवन का आधार अब आप ही हैं।

वह अपने को सँभालकर, हाथ पर ठोढ़ी को टिकाकर बैठी, चिन्ता में डूबी अपने भैया के पास गई। उसने स्त्रियों से कहा कि वह सारा सामान तहखाने में ले चले और वहाँ चुपचाप अपना काम करता रहे।

बहन की बात स्त्रियों को जँच गई। दोनों ने संगमरमर के टुकड़े और बनी-अधबनी मूर्तियाँ उठाकर तहखाने में जमा दीं।

स्त्रियों ने तहखाने में अपना काम शुरू कर दिया। वह अपने काम में इतना डूब गया कि उसे समय का भान ही नहीं रहा। कब दिन निकला और कब रात हुई, उसे कुछ होश नहीं रहा। उसकी बहन ही उसकी सार-सँभाल करती। वह उसके स्नान और खाने-पीने की समय पर व्यवस्था करती।

उन्हीं दिनों यूनान की राजधानी एथेंस में कला-कृतियों की एक प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। सारे यूनान के कलाकारों ने इस प्रदर्शनी में अपनी कला के नमूने प्रस्तुत किए। दूर-दूर के कलापारखी और कलात्मक वस्तुएँ खरीदने वाले वहाँ आ जुटे। एथेंस के प्रमुख नागरिक, विचारक और विद्वान् भी इस मेले में आए।

इस मेले का आयोजन 'एगोरा' नामक स्थान में हुआ। पेरीक्लीज इस उत्सव के सभापति थे। उनके एक ओर श्रीमती एस्पेसिया बैठी थीं। सुकरात, सोफोक्लीज आदि प्रसिद्ध विचारक और विद्वान् वहाँ उपस्थित थे।

दर्शक घूम-घूमकर कलाकृतियों को देख रहे थे। अपनी-अपनी रुचि और अपनी-अपनी पसन्द। किन्तु एक जगह दर्शकों का जमघट ज्यादा था। जो आता, वहीं ठिठक जाता। यहाँ रखा हुआ कलाकृतियों का समूह कुछ निराला ही था। कलाकार ने इन मूर्तियों में प्राण फूंक दिए थे। ऐसा लगता था कि ये अभी बोल पड़ेंगी। भावों को पत्थरों में जिस खूबी से उकेरा गया था और उतारा गया था, वह अद्भुत था। यही कारण था यहाँ बहुत भीड़ थी और लोग कलाकार से भेंट करने को उतावले हो रहे थे। एक-दूसरे से

कलाकार का नाम पूछ रहे थे। पर किसी को कुछ मालूम नहीं था। यह बड़ी विचित्र बात थी कि कलाकृतियाँ थीं और कलाकार गायब था। कलाकार का किसी को कुछ पता नहीं था। मेले के आयोजकों को भी नहीं।

जब दर्शक इन मूर्तियों की बहुत प्रशंसा करने लगे तो दूसरे कलाकारों ने सोचा कि ज़रा चलकर देखें तो सही, ऐसी क्या बात है कि सभी प्रशंसा कर रहे हैं। और ज्यों ही वे इन मूर्तियों को देखते, उनके चेहरे उतर जाते।

दर्शकों में प्रश्न उभरा, "किस कलाकार ने ये मूर्तियाँ बनाई हैं? उसका नाम-धाम क्या है? वह सामने क्यों नहीं आ रहा है? ऐसा लगता है कि सम्भवतः कला के अधिष्ठाता देवता अपोलो ने अपने हाथों इन मूर्तियों को सिरजा हो।"

कहीं से कोई उत्तर नहीं मिला। लोग मूर्तिकार से परिचित होने के लिए उतावले हो रहे थे।

इतने में एक लड़की को लगभग घसीटते हुए, कुछ लोग वहाँ ले आए। बेचारी लड़की के कपड़े इस खींच-तान में अस्त-व्यस्त हो गये थे और उसके बाल भी बिखर गये थे। वह घबराई हुई थी।

पकड़कर लाने वालों ने कहा, "यह लड़की इन

मूर्तियों को सिरजने वाले को जानती है। पर बता नहीं रही है।"

दर्शकों ने भी लड़की से कलाकार का नाम बताने का अनुरोध किया, पर वह चुप ही रही। कुछ नहीं बोली। मेले के व्यवस्थापकों ने उसे पहले तो पुरस्कार देने का प्रलोभन दिया और जब इस पर भी उसने मुँह नहीं खोला तो दण्ड का भय दिखाया गया। पर लड़की फिर भी नहीं बोली।

तब पेरीक्लीज़ ने कहा, "कानून से न डरने वाली इस लड़की को जेल में बन्द कर दो। कानून सबसे बड़ा है।"

ज्यों ही सिपाही उसे हथकड़ियाँ डालने के लिए आगे बढ़े, भीड़ में से एक नवयुवक तेजी से आगे बढ़ा। उसके बाल बिखरे हुए थे। कपड़े भी साधारण थे, पर आँखों में बड़ी चमक थी। वह सीधा पेरीक्लीज़ के पाँवों में जा पड़ा। उसने विनती की कि "इस लड़की को छोड़ दिया जाए। वह मेरी बहन है। इन मूर्तियों को बनाने का अपराध मैंने किया है। मेरे गुलाम हाथों ने इन मूर्तियों को गढ़ा है।"

'यह मूर्तियाँ किसी गुलाम ने बनाई हैं' यह सुनते ही दर्शक भड़क उठे। कानून द्वारा गुलामों के ललित-कलाओं में भाग लेने पर पाबन्दी जो लगी हुई थी।

लेकिन पेरीक्लीज ने खड़े होकर कहा, "जब तक मैं जीवित हूँ, ऐसा नहीं हो सकता। एक बार इस युवक की बनाई हुई मूर्तियों को गौर से देखो। यह मूर्तियाँ तुम्हारा और तुम्हारे कानून का मजाक उड़ा रही हैं। कानून का उद्देश्य कला और कलाकार को प्रोत्साहन देना होना चाहिए। कलाकारों के हाथ काटना नहीं। सब कलाकारों की एक ही जाति होती है। बस, कलाकार-जाति। गुणी की परख गुण से होती है। इसका स्थान जेल में नहीं, यहां मेरे पास है। इस ऊँचे आसन पर। इसे मेरे पास लाकर सम्मानपूर्वक बिठाओ।"

हजारों दर्शकों की हर्षध्वनि के बीच एस्पेसिया ने फ़ियां के सिर पर मुकुट रख दिया और उसकी बहन का स्नेह से चुम्बन लिया।

पेरीक्लीज ने उस कानून को समाप्त कर दिया।

मित्र के लिए मौन बलिदान

"बैंजामिन ओवेन—रेजिमेंट वारमॉट वालंटियर्ज। पिछली रात अपने पहरा देने के स्थान पर सोता हुआ पाया गया। सैनिक अदालत ने उसे चौबीस घण्टों के अन्दर प्राण-दण्ड देने का निर्णय दिया है। कारण यह

है कि यह अपराध यद्यपि ऊपर से देखने में साधारण लगता है पर जिस समय और स्थान पर यह अपराध हुआ है, उस सारी परिस्थिति को देखते हुए यही दण्ड उचित है।"

बेंजामिन ओवेन के पिता ने जब ऊपर लिखा तार पढ़ा तो उसकी आँखों से आंसुओं की धारा बह चली। उसने कहा, "जब मैंने बेंजामिन को देश-हित के लिए सेना में भेजा था तो सोचा था कि मैंने देश-सेवा के लिए अपने इकलौते पुत्र को सौंपकर, देश के ऋण से मुक्त हो गया हूँ। उसके पहरा देते समय क्षण-भर को झपकी लग गई होगी। मैंने कभी भी उसे अपने कर्त्तव्य के प्रति लापरवाह नहीं देखा। यह मेरा कैसा दुर्भाग्य है कि कर्त्तव्य-परायणता में लाखों में एक मेरा वह पुत्र कर्त्तव्य में लापरवाही करने के कारण प्राणदण्ड पा रहा है!"

उसी समय बेंजामिन की छोटी बहन ब्लोसम बाहर किसी की आवाज सुनकर देखने निकली और हाथ में एक पत्र लेकर लौटी। पत्र बेंजामिन का था।

उसने पत्र पिता के हाथ में दे दिया। पिता ने पत्र खोलकर पढ़ना शुरू किया। उसमें लिखा था—"पूज्य पिताजी, पहरा देते समय सोने के कारण मुझे प्राणदण्ड मिला है। पहले मुझे मृत्यु का भय लगता था पर उस

पर अच्छी तरह विचार करने पर मेरा भय जाता रहा है। लोगों ने मुझे बताया है कि मुझे मृत्युदण्ड देने से पूर्व न तो बांधा जाएगा और न मेरी आंखों पर पट्टी बांधी जाएगी। वे चाहते है कि मैं वीर पुरुष की तरह मृत्यु का सामना करूँ।

"पिताजी, मैंने सोचा था कि मेरा शरीर देशरक्षा में, युद्ध के मैदान में काम आएगा और जब मैं रणक्षेत्र में वीरगति को प्राप्त करूँगा तो यह मौत देश की रक्षा के लिए, शत्रुओं से जूझते हुए होगी। एक वीर की मृत्यु जैसी होनी चाहिए, वैसी मेरी मृत्यु होगी। पर अब मैं शत्रु की नहीं, अपने साथियों में से किसी एक की गोली से मारा जाऊँगा—एक वीर की तरह नहीं, कुत्ते की तरह। कर्त्तव्य-पालन करते हुए नहीं, कर्त्तव्य-विमुख होने के कारण।

"हाय पिताजी! मुझे दुःख इस बात का है कि इस अपमानजनक स्थिति में भी, मैं अब तक जीवित क्यों हूँ!

"एक कुपुत्र का पिता होने का अपमान आपको जीवन-भर सालता न रहे, इसलिए जो सचाई है, उसे आपको बता देना चाहता हूँ। और मेरी विनम्र प्रार्थना है कि मेरी मृत्यु के बाद आप भले ही इस बात को प्रकट कर दें किन्तु मेरे जीवनकाल में इसे अपने तक

ही सीमित रखें।

"आपको पता है कि मैंने अपने साथी जेमीकार की माता से प्रतिज्ञा की थी कि 'मैं उनके पुत्र की रक्षा करूँगा और जब वह बीमार पड़ा रहा तो मैंने उसकी भरसक सेवा की। बीमारी के बाद उसके शरीर में यथेष्ट शक्ति आने से पहले ही, फिर काम पर उपस्थित होने की आज्ञा उसे मिली।

"जिस रात मुझे झपकी लगी, उससे पिछले दिन कूच करते समय मैंने उसका सामान भी अपनी पीठ पर लादा, क्योंकि उसका दुर्बल शरीर पैदल-मार्च में बोझ उठा सकने में असमर्थ था। शाम को हमें तेज चलने की आज्ञा हुई। दिनभर दो का बोझ उठाकर मार्च करने के कारण मैं भी थक चुका था। तेज चलने की आज्ञा मिलने पर बड़े कष्ट से चल सका। एक-एक कदम चलना भारी हो रहा था। ऊपर से बोझ लदा हुआ था। हमारे बाकी साथी भी बुरी तरह थक चुके थे। पर मैंने क्योंकि दो जनों का बोझ उठाया था, इसलिए मेरी हालत ज्यादा खराब थी। इसके बावजूद मुझे जेमीकार को बीच-बीच में सहारा देना पड़ता था। उसका दुर्बल शरीर इस कठिन परिश्रम के योग्य नहीं था। इस बात की पूरी सम्भावना थी कि वह कहीं भी गिर पड़ेगा। जब हम किसी तरह पड़ाव

पर पहुँचे तो मैं निढाल हो चुका था। यदि बन्दूक की नाली भी मेरे माथे के साथ सटा दी जाती और निरन्तर जागने के लिए विवश किया जाता, तो भी मैं रात-भर नहीं जाग सकता था।

"आज मेरे अधिकारियों ने मुझ पर कृपा करके पत्र लिखने की अनुमति दी है। पिताजी, ये निर्दोष हैं। आप उनके प्रति मन में दुर्भाव न लाएँ। वे भी अपने कर्त्तव्य का ही पालन कर रहे हैं। यदि उनके अधिकार-क्षेत्र में होता तो वे मुझे अवश्य बचा लेते। आप अपने मन में यह भी मत सोचना कि जेमीकार के कारण मैं मृत्युदण्ड भोग रहा हूँ। उसे इस समाचार से बहुत आघात लगा है और वह आत्मग्लानि से दुखी है। वह सबसे कह रहा है कि किसी तरह मेरे बदले उसे मृत्युदण्ड दिया जाए, क्योंकि उसके विचार में, उसकी वजह से ही मुझे दण्ड मिल रहा है।

"मैं माँ और ब्लोसम की याद आते ही व्याकुल हो जाता हूँ। पिताजी, उन्हें किसी तरह सान्त्वना देना। उन्हें कहना कि मैं निर्दोष हूँ। वे मेरे पुत्र और भाई होने के नाते इस समय जैसी लज्जा का अनुभव कर रही होंगी, मृत्यु के बाद असली बात का पता लग जाने पर वैसा महसूस नहीं करेंगी। मैं अपने को वीर-गति प्राप्त ही मानता हूँ। भगवान् हम सबका सहायक

और रक्षक है। मेरा हृदय विछोह की वेदना से फटा जा रहा है। विदा ! सदा के लिए विदा !!

"आज साँझ को मैं अन्तिम बार गौओं को खेतों से लौटते देखूंगा और प्यारी ब्लोसम द्वार पर खड़ी मेरी बाट देखेगी पर मैं कभी नहीं लौटूँगा। ईश्वर आप सब पर कृपा करे।"

ओवेन के वृद्ध पिता ने चिट्ठी समाप्त करके लम्बी साँस ली और कहा, "ईश्वर को धन्यवाद है। मैं जानता था, बेंजामिन कर्त्तव्य के प्रति कभी लापरवाही नहीं करेगा।"

उसी रात के पहले पहर में बालिका ब्लोसम चुपचाप घर से निकल पड़ी। कोई दो घंटे बाद वह रेलगाड़ी में सवार हो गई और मुँह-अँधेरे ही अमेरिका की राजधानी न्यूयार्क के ह्वाइट हाउस में जा पहुँची।

राष्ट्रपति ने मुस्कराकर इस बालिका को करुणार्द्र दृष्टि से देखकर पूछा, "बिटिया ! इतने सवेरे तुम कहाँ से चली आ रही हो। क्या काम है ?"

ब्लोसम ने कहा, "महामहिम ! बेंजामिन का जीवनदान !"

राष्ट्रपति लिंकन ने पूछा, "यह बेंजामिन कौन है ?"

बालिका विनयपूर्वक बोली, "मेरा भाई है। अपने पहरे के समय वह सो गया, इसलिए उसके अधिकारी

उसे प्राणदण्ड देना चाहते हैं।"

कुछ याद करते-से राष्ट्रपति ने कहा, "बच्ची ! क्या तुम जानती हो, वह समय कैसा भयानक था ! उसकी जरा-सी लापरवाही से हजारों लोगों की जानें जा सकती थीं।"

बालिका बोली, "पिताजी भी यही कह रहे थे। परन्तु वह बेचारा इतना थक गया था कि विवश था। उसका साथी जेमीकार बहुत दुर्बल था। इसलिए मार्च के समय मेरे भाई को उसका सामान भी उठाना पड़ा। उस रात पहरे पर जेमीकार की बारी थी, मेरे भाई की नहीं। किन्तु जेमीकार कुछ दिन पहले ही बीमारी से उठा था, इसलिए दिन-भर के मार्च के बाद एकदम निढाल हो गया था। मेरे भाई ने अपनी थकान की कतई परवाह न करते हुए, उसके बदले पहरा देना स्वीकार कर लिया।"

राष्ट्रपति बच्ची की बात को ठीक-ठीक समझ नहीं पा रहे थे। उन्होंने बच्ची को अपने पास बुलाकर बताने को कहा।

ब्लोसम ने जेब से भाई का पत्र निकाला और राष्ट्रपति के हाथ में दे दिया।

राष्ट्रपति ने पत्र पढ़ा, कुछ लिखा और घन्टी बजाई। तुरन्त एक व्यक्ति भीतर आया। राष्ट्रपति

ने कहा, "यह पत्र अभी जाएगा।" फिर ब्लोसम की ओर मुड़कर कहा, "बेटी ! तुम अपने घर जाओ और अपने पिता से कहना कि यदि उनके पुत्र को प्राणदण्ड दे दिया जाता तो भी उन्हें शान्त रहना चाहिए था। किन्तु अब्राहम लिंकन उसके जीवन को नष्ट करने के योग्य नहीं समझता। तुम भी अब कल तक यहीं ठहरो। बेंजामिन मौत की घड़ियाँ गिनता रहा है। उसने वीरता से मौत का सामना किया है। अब उसे कुछ दिनों की छुट्टी मिलनी चाहिए। इसलिए वह भी तुम्हारे साथ ही घर जाएगा।"

ब्लोसम ने राष्ट्रपति का धन्यवाद किया और बोली, "प्रभु ईसा आप पर कृपा करे।"

मैं स्कूल जाऊँगा !

ये महोदय धनवान् व्यक्ति थे। घर में सब सुख-सुविधाएँ मौजूद थीं। उनके दो बेटे थे। दोनों बेटे पढ़ने-लिखने में सुस्त थे। उनको लगता होगा कि हमारे पिता के पास बहुत धन-सम्पत्ति है। अगर हम नहीं भी पढ़ेंगे तो भी कुछ हानि नहीं होगी। बड़े बेटे चार्ल्स की उम्र पन्द्रह साल थी और वह स्कूल छोड़ना चाहता था।

एक दिन श्रीमान् ग्रे ने उससे पूछा, "चार्ल्स ! तुम स्कूल क्यों नहीं जाते हो ?"

"पिताजी, मेरा मन पढ़ाई में बिलकुल नहीं लगता है। और फिर पढ़ने से लाभ भी तो कोई नहीं है।" चार्ल्स ने उत्तर दिया।

पिता ने कहा, "अभी तुम्हारी उम्र ही कितनी है। और पढ़ने से कोई लाभ नहीं है, यह तुम कैसे कहते हो। अभी तुम्हें आता ही क्या है !"

चार्ल्स ने अपने पड़ोसी और मित्र का उदाहरण देते हुए कहा, "जितना जार्ज जानता है, उतना तो मैं जानता ही हूँ। उसे स्कूल छोड़े तीन महीने हो गए हैं। फिर उसके पिता के पास भी पर्याप्त सम्पत्ति है। इसलिए भी पढ़ने-लिखने की क्या जरूरत है !"

"अगर तुम्हारा ऐसा ही विचार है तो ठीक है। कल से तुम्हारा स्कूल जाना बन्द।" पिता ने कहा और पुत्र के चेहरे को ध्यान से देखने लगा।

चार्ल्स पिता की अनुमति मिलने से प्रसन्न हो गया। पिता ने आगे कहा, "किन्तु मेरी बात अच्छी तरह सुन और समझ लो। अगर तुम स्कूल नहीं जाते तो तुम्हें काम पर जाना होगा। मैं तुम्हें निठल्ला नहीं बैठने दूंगा।"

× × ×

दूसरे दिन पिता ने पुत्र को साथ लिया और जेल में बन्द अपने एक मित्र से मिलने गया। जब दोनों बचपन के साथी और सहपाठी मिले तो ग्रे महोदय ने कहा, "मित्र, तुमसे मिलकर प्रसन्नता तो हुई किन्तु तुम्हें यहाँ इस रूप में देखकर मुझे बहुत दुःख हो रहा है।"

"मैं यहाँ शारीरिक से भी अधिक मानसिक यातना भोग रहा हूँ।" बन्दी ने कहा। फिर मित्र के साथ आए लड़के की ओर देखकर कहा, "शायद यह तुम्हारा बेटा है!"

ग्रे ने कहा, "हाँ, यह मेरा बड़ा पुत्र चार्ल्स है। जब मैं और तुम इसकी उम्र के थे तो साथ-साथ स्कूल जाते थे। याद करो उन दिनों की बातें। कैसे मजेदार दिन थे!"

"भूला तो नहीं हूँ। हाँ, भूल जाना जरूर चाहता हूँ।" बन्दी क्षणभर को बचपन की यादों में खो गया, "कभी-कभी सोचता हूँ कि मेरा आज का जीवन सपना है और यह सपना जल्दी ही टूटेगा। मैं फिर वास्तविक दुनिया में आ जाऊँगा।"

"मित्र! तुम बहुत कमजोर हो गए लगते हो। पिछली बार जब हमारी भेंट हुई थी तब तो तुम अच्छे-भले थे। कहीं मेरी आँखें तो धोखा नहीं खा रही हैं।"

थे महोदय ने कहा ।

"दोस्त ! मैं अपनी गिरावट के बारे में सोचता हूँ तो इस परिणाम पर पहुँचता हूँ कि अगर उस एक बात की ओर उंगली उठाऊँ, जिसने मेरा सर्वनाश किया तो वह है मेरा 'निठल्लापन' । निठल्लेपन की वजह से ही मैं बुरी संगत में फँसा । कहते हैं न कि खाली मन शैतान का घर । मेरा मन पढ़ाई में नहीं लगता था । मैं सोचता, मुझे पढ़कर कोई नौकरी तो करनी नहीं है । अमीर बाप का बेटा हूँ । ठाठ से रहूँगा, मनमाना खाऊँगा और पहनूंगा । यह सोचना ही मेरे सर्वनाश का कारण बना । पिताजी जब स्वर्ग सिधारे तो पीछे खूब धन-सम्पत्ति छोड़ गए थे । क्योंकि इस सम्पत्ति में एक फूटी कौड़ी भी मेरी मेहनत की नहीं थी, इसलिए मैं उस सम्पत्ति का मूल्य और महत्त्व नहीं समझता था । मेरे स्वर्गीय पिताजी ने उस सम्पत्ति को जोड़ने में कितना खून-पसीना बहाया था, इसका मुझे लेशमात्र भी अनुमान नहीं था । यही वजह है कि मैंने बड़ी बेरहमी से उस सम्पत्ति को उड़ाना शुरू किया और एक दिन ऐसा भी आया जब मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं बची और मैं कंगाल हो गया । पैसा कैसे कमाया जाता है, यह तो मैंने सीखा ही नहीं था । किन्तु पैसों की मुझे बेहद जरूरत थी । अब पैसे आएँ तो कहाँ से आएँ

और कैसे आएँ।

"अब मैंने एक भूल और की। यह भूल थी बिना परिश्रम किये पैसा पाने की। उसका परिणाम आज आपके सामने है।" इसके बाद उसने ग्रे महोदय को अपनी दिनचर्या बताई जो कि बड़ी कठोर थी।

फिर ग्रे महोदय जेलर के पास गए। चार्ल्स साथ ही था। उन्होंने जेलर से पूछा, "श्रीमान्! आप जेल में बन्दियों को दस्तकारी सिखाते हैं। क्या बन्दी उसमें रुचि लेते हैं और जेल से छूटने के बाद उनमें से कितने प्रतिशत ऐसे हैं जो उस दस्तकारी से अपनी जीविका कमाते हैं?"

जेलर ने कहा, "सच तो यह है कि सौ में से दस भी नहीं। वे न तो सीखने में रुचि लेते हैं और न अपने को बदलने में।"

श्री ग्रे और चार्ल्स जेल से लौट पड़े। पिता ने पुत्र से पूछा, "चार्ल्स, मैं जानना चाहता हूँ कि तुम्हारा अब क्या विचार है? तुमने मेरे उस बन्दी मित्र की राम-कहानी तो अपने कानों सुन ही ली। मैं तुम्हें बार-बार समझाता रहा हूँ कि पढ़ने में मन लगाओ। पर तुमने मेरी बात नहीं मानी। यह ठीक है कि लोग मुझे धनी व्यक्ति समझते हैं और मैं वैसा हूँ भी।

"मैं तुम्हारे लिए सभी साधन और अवसर जुटा

सकता हूँ जो एक पिता को पुत्र के लिए जुटाने चाहिए। अब यह तुम्हारे ऊपर निर्भर करता है कि तुम उनसे कितना लाभ उठाते हो। किन्तु मैं तुम्हें खाली बिठाकर नहीं पाल सकता। एक मास भी नहीं।"

चार्ल्स की आँखें खुल गई थीं। उसने एक मिनट भी नहीं लगाया और बोला, "पिताजी, मैं सोमवार से स्कूल जाऊँगा और अब आपको कभी शिकायत का अवसर नहीं दूँगा।"

□□